16 pp

C

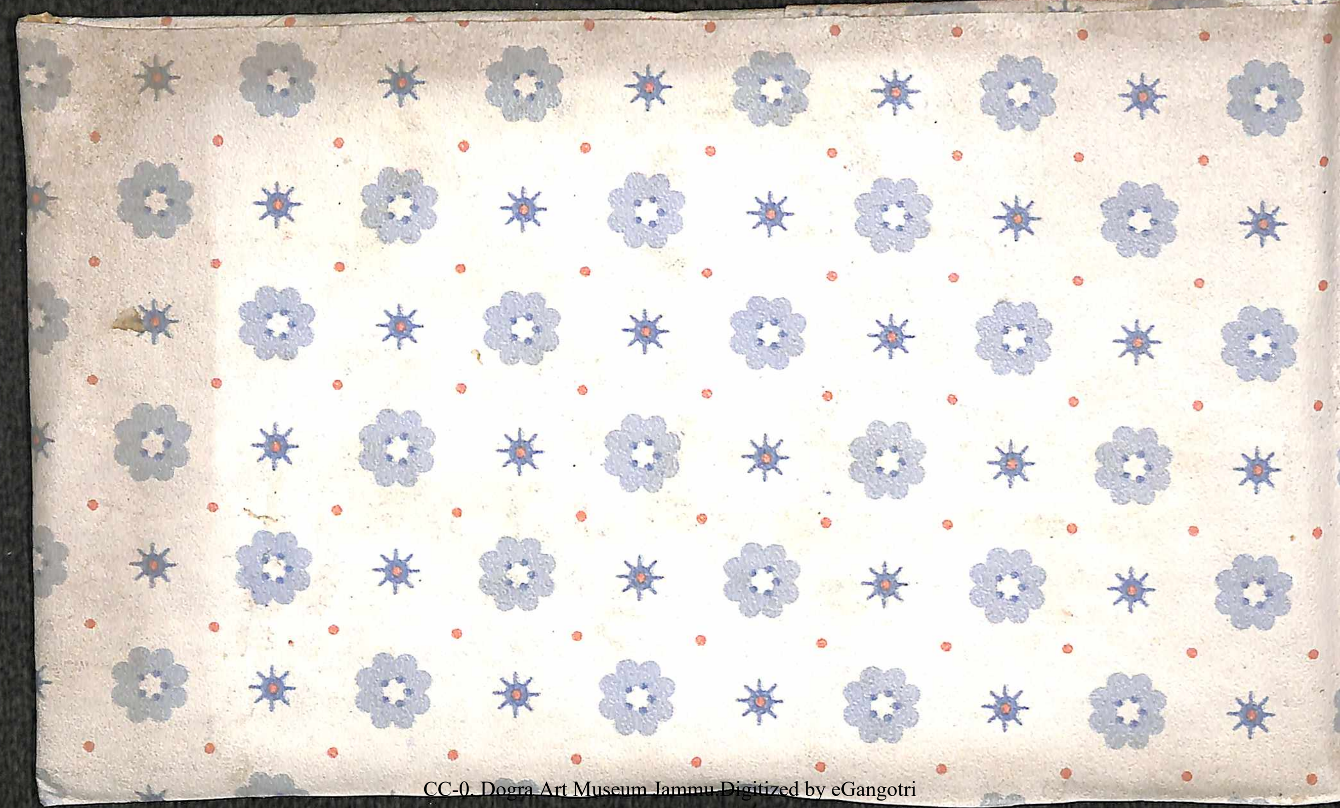
15.9X9.1 cms.

14

Birch-Bark

8 Leaves

14
435



14. Raksugna Mantra, Vedic Text
Written on birch-bark in Sharada character.
Complete, good condition

pp.16

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

J.
M.
O

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ਰਘੁਕੁਠ ਮਧੁ ਪ੍ਰਵਿਸਾਂਮਿ ਪਾਹ੍ਰਿੰ ਮਹੂ ਪ੍ਰਵਿਸਾਮਿ ਰੇ
ਕ੍ਸ਼ਾਗ੍ਰੰ ਵਮ੍ਰਵਤ੍ਰਲੰ ਧਨਗੰ ਵਮ੍ਰਵਤ੍ਰਲੰ ਵਿਸ੍ਰਿਤੰਧ
ਨਾਤ੍ਰਿ।ਵਿਤ੍ਰਿ।ਤ੍ਰਿਕ੍ਰਾ ਤਰਸ੍ਰਾਯਤੰ ਤਰ੍ਰਮਚ
ਤ੍ਰਿ ਮਦਰਾ ਸ੍ਰੁਖ੍ਰ ਤੇ ਦਾਤ੍ਰਸਪਗ ਕ੍ਰੋਮ ਦਾ।ਵ:
ਦੈਸ ਮਸ੍ਰਾਹੁਤੇ ਪਸ੍ਰਾ ਦ੍ਰਸੀਖੁੰ ਤ ਮਸਾਰਾਤੇਤ।
ਰਸ਼ੀ ਖ੍ਰਤੈ।ਤ੍ਰਿ ਮੰਡਲ ਮਚੇ ਟੇਵਾ ਪ੍ਰਧਾਤੁ ਵੈ ਮਦੋ

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ष्ट्रे(?) सैं तथा रूप कान्तस्य(?) सृष्ट(?) ममये मायंक(?)
लै तथा रूप कान्त(?) सृष्ट(?) ममये मायं का लै(?)
क्षिवनिसं(?) नतमजि(?) मच पापानि(?) दैधानि(?)
सैच निविश्रुतं(?) नत रूपि(?) मतन्नीक(?) यानिर(?)
सं स्वयं रूप गौतिश्रुत(?) तमंत्रल(?) नपमल(?) वयं
नदि(?) गौ वयं मनमन(?) वयं पृथिवी(?) महू(?) वीरवा(?)

ग.
मं.
५

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

सुमित्रः प्रथ विसर्जक : सुमित्र नमस्ते आदि स्तु
मि : सुमित्रे वन सुपाठिष्ठ णा त प्रधन मु पारत :
पत्रिमा त्रा : सुतं वाने विनतेषु रामाम्य : आदि
लिक्रा मनव : सु मन्मे पिषिने तेव चावम
गमविड ठहस्रु लहि : वर्ष याम तेवं ठहस्पमे
म कि ठिदराज : क्रि यन्ते सुधुवं मनुष्ठाठि वे

ग. म. 5

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

